ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

जनपद पौड़ी गढ़वाल मे जनसंख्या वितरण एंव वृद्धि

Population Distribution and Growth In District Pauri Garhwal

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 25/10/2020, Date of Publication: 26/10/2020

अर्चना
असिस्टन्स प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
टी. एस. आर.राजकीय महाविद्यालय,
नैनीडाण्डा, पौड़ी, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भूगोल के अध्ययन में मानव का केंद्रीय स्थान है। क्योकि वही अपने प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरणओं का उपयोग करता है, उनसे प्रभावित होता है और उनमे परिवर्तन करता है। भूमि, जल, मिट्टी, खनिज पदार्थ, वनस्पति एवं जन्तुओ का उपयोग मनुष्य करता है। वहीं उत्पादन, खेती, पशुपालन, उद्योग व्यापार और परिवहन इत्यादि करता है। वही राजनैतिक, सांस्कृतिक विकास करता हैं वह स्वंय संसाधनों के रूप में समस्त संसाधनों का उपयोग एवं उपभोग कर संस्कृति का निर्माण करता है। पृथ्वी पर मानव की संख्या (जनसंख्या) कितनी है। उसका वितरण किन प्रदेशोध्क्षेत्रो में अधिक या कम है, उसमें कितनी वृद्धि या कमी हुई। उसकी क्षमता कैसी है। उसकी क्या समस्याएं है। इन सभी बातों का अध्ययन आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। अर्थात दूसरे शब्दों में जनानकी विश्लेषण संसाधन परिवर्तन के एक घटक के रूप में प्रवास केंद्रीय स्थान रखता है। मनुष्यों के आदिकाल से ही प्रवास की प्रवृति देखने को मिलती है। जहा उसे जीविकोपर्जन के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है, वही जाकर जीवन यापन करने लगता है। पुराने समय से यातायात के साधनो के अभाव में आतंरिक प्रवास की प्रवृति रही और परिवहन में विकास के परिणामस्वरूप जनसंख्या विकसित क्षेत्रो के तरफ हमेशा प्रवासित होती रही एवं सतत् रहेगी।

Humans have a central place in the study of geography. Because he uses his natural and cultural environments, he influences and changes them. Man uses land, water, soil, minerals, vegetation and animals. At the same time, production, farming, animal husbandry, industry trade and transportation etc. are done. He does political, cultural development, he uses all the resources as his own resources and creates culture. What is the number of human beings (population) on earth? In which regions of the region its distribution is more or less, how much increase or decrease in it. How is his ability? What are his problems Study of all these things is necessary and important. That is, in other words, migration analysis holds a central place as a component of resource change. The trend of migration is seen only from the beginning of humans. Where he finds a favorable environment for livelihood, he goes to live. Due to lack of means of transport, there has been a trend of internal migration and as a result of development in transport, the population will always migrate towards the developed areas and will be sustainable.

मुख्य शब्द : जनसंख्या वितरण, जनगणनानुसार, वातावरण ।
Population Distribution, According To Population, Environment.

प्रस्तावना

जनसंख्या घनत्व को 1949 और 2001 के जनगणनानुसार अलग–2 मानचित्र द्वारा दर्शाते हुए तुलनात्मक रूप में देखें तो 0–100 प्रथम कटगरी में पाँच विकासखण्ड, थलीसेण, पाबो, खिर्सू, यमकेश्वर (द्वारीखाल) आते है। द्वितीय कटगरी में 101–200 वर्ग किव मीव के अंतर्गत 1991 के जनगणनानुसार 6 विकासखंड आते है जिसमें पोखडा कल्जीखल, कोट, नैनीडाण्डा, जहरीखाल, रिखणीखाल आते है जिसमें दूसरी कटगरी में जव सव घनत्व प्रति वर्ग किव मीव अधिक पाई जाती हैं। सन् 2001 के जनगणनानुसार जनसंख्या घनत्व की कटगरी नं दो में आठ विकासखंड आते है जहाँ घनत्व 101–200 तक प्रति वर्ग कीव मीव है। इसमें एकेश्वर, वीरोखाल, पोखडा, कल्जीखाल, कोट, नैनीडाण्डा, जहरीखाल, रिखणीखाल विकासखंड आते है। तीसरी कटेगरी में 1991 की

जनगणनानुसार 201 से 300 के अंतर्गत तीन विकासखंड आते है जहा जनसंख्या घनत्व पूरे जीले में अधिक है। जबकि 2001 की जनगणनानुसार केवल एक विकासखंड पौड़ी आता है जहा 208.95 प्रति वर्ग किव मीव जनसंख्या घनत्व है। चौथे कटेगरी में 301 से अधिक वाली में दुगड्डा विकासखंड आते है जहाँ 2001 में जनसंख्या 392.74 प्रति वर्ग किव मीव है। जोकि गढ़वाल जनपद में सबसे अधिक है। जबकि 1991 में यहाँ 178.70 जव संव घनत्व प्रति वर्ग किव मीव था। सन् 1991 और 2001 की जव सव घनत्व कम हुआ उसका कारण वहा से जन्समुह का दूसरे क्षेत्रो में जाकर प्रवास हुआ। क्षेत्र के सर्वे करने से ज्ञात हुआ है कि 11 (ग्यारह) विकसखण्डो से उत्प्रवास नीचे की तरफ था ये कहे किदूसरे क्षेत्रो को प्रवास हुआ जहा सुविधा एवं रोजगार एवं उद्पुर्ति हो सकती है, पहाड़ से मैदानी क्षेत्रो को दूसरे शहरो को विशेष रूप से कोटद्वार, हरिद्वार, देहरादून, ऋषिकेश, नजीबाबाद, सहारनपुर, रूडकी इसके अलावा मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा, दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, इलाहाबाद, वनारस, आगरा आदि शहरो को उत्तरोत्तर 1991 के बाद प्रवास होता रहा। जहा जनसंख्या घनत्व कम हुआ वे विकासखंड पौड़ी, एकेश्वर, वीरोखाल, पोखडा, कल्जीखाल, कोट, नैनीडाण्डा, जहरीखाल, रिखणीखाल, पाबो एवं द्वारीखाल क्रमशः 5.82, 8.13, 12.71, 14.04, 8. 85, 17.36, 4.64, 5.24, 0.81, 1.07, 3 प्रति वर्ग कि0 मी0 जनसंख्या घनत्व हास हुआ एवं घट गया। इसकी तुलना में 2001 में 214.04, 9.26, 11.45, 7.86 वर्ग कि0 मी0 जनसंख्या घनत्व चार विकासखंडो की बढ़ गयी। दुगड्डा विकसखण्ड में अप्रत्याशित जव संव घनत्व में वृद्धि हुई। इसका मुख्या कारण जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक संसाधन एवं सम्पदाओ सुविधाओ से यह क्षेत्र परिपूर्ण हैं। कृषि के लिए सिंचाई के साधनो की सुविधा, कृषि योग्य उपजाऊ भूमि, जनसमुह को बसने के लिए सुरक्षित एवं समतल स्थान है।

अध्ययन क्षेत्र

इसके विपरीत जिन 11 विकासखंडो में जनसंख्या घनत्व 2001 में कम हुआ। इसका कारण क्षेत्र एवं विकासखंडो में अभावग्रस्त तथा असुविधाओ से व्याकुल है उदहारण स्वरूप पौड़ी जनपद एवं विकास खंड को देखें तो यहाँ श्रीनगर में हेमवति नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्व विद्यालय जो पहले राजधानी रहा एवं स्वयं पौड़ी गढ़वाल मंडल मुख्यालय विश्वविद्यालय का कैंपस भी है लेकिन फिर भी 1991 से 2001 में 5.82 जनसंख्या घनत्व कम होगया। सबसे अधिक आपदाओ, भूस्खलन, भूकंप, सबसे अधिक आवगमनो के सधनो का आये दिन दुर्घटनाग्रस्त होकर अलकनन्दा, भागीरथी, नयार इत्यादि में छत बिछत हो जाना है। हाल ही में सतपुली में बस खाई में गिरी, 7 मरे, सतपुली बैड के निकट हुआ हादसा 17 घायल हुए। बस लैंसडोन से ग्वालदम जा रही रूपकुण्ड प्रयटन विकास समिति की थी। दूसरा उदहारण नदी में बस गिरी, 31 तीर्थयात्री मरे, विश्नुप्रयाग के समीप हुआ हादसा, बद्रीनाथ से दर्शन कर लौट रहे थे। उपरोक्त दहला देने वाली घटनाएँ सरकार द्वारा सड़क एवं दुर्घटनाग्रस्तो का सही उपचार एवं रोकथाम व्यवस्था न करना।

अध्ययन का उद्देश्य

पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण पर पहले से ही अब तक परिवर्तन होते रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेगा। वर्तमान वितरण पर सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि क्षेत्र पहाड़ी होने के कारण विषम है। जनसंख्या के निवास के लिए एक ओर वातावरण के द्वारा निशिचत की हुई सीमा हैं, दूसरे सरकार की नीति पर निर्भर है। यहाँ जनसंख्या के कुछ समूह अपनी छाँट के क्षेत्रो में रहते है और आजीविका कमाने की विधि अपनी छाँट के अनुसार रखते है। आंकड़ों को देखने से पता चलता है 1971 में गढ़वाल का क्षेत्रफल 5440 वर्ग कीव मीव था। आवासीय मकानों की संख्या 96108 एवं परिवारों की संख्या 122920 तथा कुल जनसंख्या 519181 थी। 1981 में 5440 क्षेत्रफल था आवासीय मकानों की संख्या 120055 तथा परिवारों की संख्या 131308 एवं कुल जनसंख्या 575208 थी। 1991 में क्षेत्रफल घट कर 5230 वर्ग की.मी. हो गया, आवासीय मकानों की संख्या 136927 तथा परिवारों जिसमें 326378 पुरुष तथा 545163 स्त्री थी। साथ में पंद्रह विकासखण्डो का विवरण सम्मिलित है।

शोध पद्धति

भूमि पर जनभार में अधिक वृद्धि हो रही है यह भार भविष्य में और भी अधिक बढ़ता जाएगा। कि पहले से क्षेत्रफल गढ़वाल का कम हो गया। सन् 2001 में आवासीय मकानों की संख्या लगभग दोगुना बढ़ गयी क्योकि 1991 में 136927 आवासीय मकानों की संख्या है और 2001 में बढ़कर 260982 हो गयी जिसका विकास खण्डवार आंकड़ा उपलब्ध नहीं हो सका। 2001 में परिवारो की संख्या 150032 बढ़कर हो गया। 2001 में जिले की सम्पूर्ण जनसंख्या 697078 थी जिसमें पुरुष 331061 तथा स्त्री संख्या 366017 थी। इससे यह पता चलता है कि महिलाओं की संख्या एवं प्रतिशत अधिक है। सन् 2001 में दुगड्डा ब्लाक का क्षेत्र कम होकर 270 वर्ग कि0 मी0 हो गया।

विधितन्त्र

सन् 1959 में संसार में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि 1.2 एकड़ थी। 1991 में प्रति व्यक्ति 1 एकड़ रही। सन् 2000 में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि 0.3 एकड़ रही। एशिया में प्रति व्यक्ति 0.7 एकड़, यूरोप में 0.9 एकड़ थी। सन् 1991 के जनगणना के अनुसार अवलोकन करें तो सबसे अधिक जनसंख्या पौड़ी विकासखण्ड में है। 2001 के अनुसार सबसे अधिक जनसंख्या घन्त्व दुगड्डा विकासखण्ड क है। उसके बाद बीरोखल, एकेश्व्र ब्लाक क नंबर आता है। कृषि ,भूमि और जनसंख्या के अनुपात से किसी प्रदेश की जनसंख्या के भार का ज्यादा ठीक ज्ञान हो गया है। जनसंख्या भार में परिवर्तन के परिणामस्वरुप जिस प्रदेश से ज0 सं0 जाती है, वहाँ जनसंख्या के भार कम हो जाता है और आर्थिक स्थिति नीचे गिरने से रुक जाती है। नये प्रदेश में जनसंख्या पहुंचने पर वहाँ उसका भार बढ़ता है। उसके अच्छे और बुरे दोनों परीणाम होते है। पौड़ी और दुगड्डा विकासखण्ड से जनसंख्या के आवास प्रवास हुआ है। इससे खेती के अयोग्य भूमि को जैसे वनो, चरागाहो, दलदलो, मरुभूमि को छोड़कर गणना की जाती है। अनुसूचित जाति–जनजाति की कुल जनसंख्या से

प्रतिशत के आंकड़े को देखने से पता चलता है कि कल्जीखाल ब्लाक में अधिक जनसंख्या अनुसूचित जाती और अनुजनजाति है। पूरे जिले ने सभी विकासखण्डो में इनकी जनसंख्या वर्तमान हैं। इसी प्रकार मुख्या कर्मकरो के कुल जनसंख्या से प्रतिशत को देखते है तो सबसे अधिक मुख्य कर्मकर पौड़ी ब्लाक में 42.91% है दूसरे नंबर पर कोट ब्लाक का नंबर आता है। तीसरे नंबर पर बीरोखाल विकासखण्ड का आता है। फिर खिर्सू ब्लाक का नंबर आता है। इसी प्रकार कल्जीखाल और पाबो ब्लाक का स्थान है यहाँ के अलावा अन्य कार्यों में जनसंख्या लगी हुई है। कृषि में लगे मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत का अवलोकन करते है तो सबसे अधिक थलीसैंण में 83.54% लोग कृषि कार्यों में लोग लगे हुए हैं इसके बाद पोखडा का स्थान है जहाँ कृषि कार्य में लोग लगे हुए हैं। फिर पाबो, रिखणीखाल का स्थान आता है जहाँ कम कृषि कार्य में लोग लगे हुए। सबसे कम प्रतिशत एकेश्वर ब्लाक के है जहाँ कम कृषि कार्य में लोग लगे हुए हैं। सभी विकासखण्डो को देखा जाये तो 50% से ऊपर लोग खेती में लगे हुए हैं। पारिवारिक उद्योग में कर्मकरो का कुल मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत देखा जाये तो सबसे अधिक यमकेश्वर ब्लाक में है और सबसे कम % हैं। साक्षरता प्रतिशत सबसे अधिक दुगड़्डा विकासखण्ड का हैं।

निष्कर्ष

जनपद में विकास खण्डवार जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण से ज्ञात होता है कि भूमि पर लोग विभिन्न कार्यों में लगे हुए अर्थात भूमि पर जनसंख्या का दबाव (भार) हैं। भूमि से सीधा संबंध कृषक का हैं। भूमि और कृषक एक दूसरे से ओत–प्रोत है। किसान भूमि पर पैदा होते है। सन् 1981 में 165037 कृषक थे सन् 1991 में कृषक 131326 थे और 2001 में 99391 थे। आंकडे को देखने से पता चलता हैकि प्रति दशक कृषक का हास होता गया अर्थात कृषि कार्य में रुझान कम होता गया कारण कृषि नीती की कमजोरी। कृषि की स्थिति निरंतर बिगड़ते जाने के मूल कारण यह है कि सरकार के ध्यान कृषि उत्पादन में वृद्धि की ओर ज्यादा रहा है और मूल्यों की वृद्धि की ओर कम विकास खण्डवार देखें तो सबसे अधिक कृषक थलीसैंण विकासखंड में 16115 कृषक है। दूसरे नंबर पर विरोखाल में 11209 कृषक है। कृषि श्रमिक 1991 में 3922 थे जो घटकर 2001 में कम होकर 1049 रह गये। परिवारिक उद्योग में 2001 में 2280 थे। अन्य कार्य में 68927 थे। कुल मुख्य कर्मकर 171647 थे। अगर सीमांत कर्मकर का टेबल देखें तो 1981 में 46236, 1991 में 50582, तथा 2001 में 98224 थे जो लगातार बढ़ते गये। कुल कर्मकर 1981 में 277307 थे। 1991 में 263320 थे और 2001 में 269871 है गये। परिवारिक उद्योग ने लगे कर्मकरो का मुख्य कर्मकरो का प्रतिशत 1991 की तुलना ने 2001 में बढ़ गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Clark, J.I. (1965): Population Geography, Pergamon Press, Oxford-*
2. *Co, P.R. (1976): Demography, Cambridge University Press] Cambridge-*
3. *Enrlich, Paul (1977): Ecoscience population, Resources, Environment, W.H. Frenan and Co., San Francisco.*
4. *Garneer, J.B. (1966): Geography of Population, Longmans London.*
5. *Gosal, G.S. (1965): Regional Aspect of Population in India] Pacific View poivd. Bol. lll.*
6. *Gosal, G.S. (1970): Population geography, Review of Survey Report in Geography, ICSSR, New Delhi.*